भारत विकास परिषद के दूसरे द्विवार्षिक अधिवेशन पर

माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का अभिभाषण

दिनांक : 3 फरवरी 2024, शनिवार	**समय : 10.30 AM**	**स्थान : खारघुली, गुवाहाटी**

- भारत विकास परिषद के राष्ट्रीय सांगठनिक सचिव श्री सुरेश जैन जी,
- पूर्वोत्तर के क्षेत्रीय अध्यक्ष श्री स्वदेश रंजन गोस्वामी जी,
- असम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर राजीव मोहन पंत जी,
- असम राजीव गांधी सहकारी प्रबंधन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर देवब्रत दास जी,
- भारत विकास परिषद के राष्ट्रीय पर्यावरण परियोजना अध्यक्ष प्रोफेसर एम. प्रेमजीत सिंह जी
- पूर्वोत्तर भारत के सभी 8 राज्यों से आए भारत विकास परिषद के अन्य प्रतिनिधिगण,
- उपस्थित युवा शक्ति एवं मातृशक्ति,
- मीडिया के हमारे मित्रों,
- देवियों और सज्जनों,

नमस्कार।

भारत विकास परिषद के दूसरे उत्तर पूर्व क्षेत्रीय द्विवार्षिक सम्मेलन के उदघाटन कार्यक्रम में आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। मुझे यह अवसर प्रदान करने के लिए मैं परिषद की उत्तर पूर्व इकाई को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

भारत विकास परिषद समाज के प्रबुद्ध, संपन्न एवं प्रभावी व्यक्तियों का एक गैर–राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय संगठन है। यह एक ऐसा संगठन है, जिसने भारतीय दर्शन एवं मूल्यों को केन्द्र बिन्दु मानकर सेवा एवं संस्कारों के विविध प्रकल्पों को माध्यम से मानव शक्ति के सम्पूर्ण एवं सर्वांगीण विकास का संकल्प लिया है।

1963 में स्थापित यह संगठन समाज के वंचित वर्ग की सेवा कर नई पीढ़ी में देशभक्ति, राष्ट्रीय एकता और अखंडता की भावना को बढ़ावा देकर सांस्कृतिक, सामाजिक, शैक्षणिक, नैतिक, राष्ट्रीय और आध्यात्मिक तथा सभी क्षेत्रों में हमारे देश के विकास और प्रगति के लिए समर्पित रूप से कार्य कर रहा है।

परिषद का उद्देश्य है समाज के उच्च, प्रबुद्ध एवं संपन्न वर्ग को सुसंगठित कर उनके हृदय में समाज के वंचित, असमर्थ एवं अशिक्षित वर्ग के प्रति संवेदनशीलता का भाव जगाना है। लेकिन ये सेवा दया भाव के रूप में नहीं, बल्कि देश की संस्कृति के अनुरूप सेवा के कर्तव्य के रूप में है।

परिषद स्वामी विवेकानन्द जी के आदर्शों का अनुसरण करते हुए संपर्क, सहयोग, संस्कार, सेवा और समर्पण के सूत्रों के माध्यम से स्वस्थ, समर्थ और संस्कारित भारत के निर्माण के लिए प्रतिबद्धता के साथ अपना योगदान दे रहा है। इस द्विवार्षिक क्षेत्रीय अधिवेशन में आप लोगों की उपस्थिति संगठन की इस प्रतिबद्धता और समर्पण को दर्शा रहा है।

मुझे बताया गया है कि इस दो दिवसीय अधिवेशन के अंतर्गत सेवा, मातृशक्ति के स्वालंबन, पर्यावरण और परिषद के वैचारिक आधार पर चर्चा की जाएगी। निःस्संदेह, सम्मेलन के ये विषय सामयिक और महत्वपूर्ण है। तेजी से विकसित हो रही दुनिया में, क्षेत्रों के लिए एक साथ आना, अनुभव साझा करना और सतत विकास के लिए सामूहिक रूप से रणनीति बनाना अनिवार्य हो जाता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन दो दिनों के दौरान चर्चा और विचार-विमर्श से नए समाधानों और सहयोगात्मक प्रयासों का मार्ग प्रशस्त करेगा, जिससे पूर्वोत्तर में विकास की गति को बढ़ावा मिलेगा।

देवियो और सज्जनो,

सेवा जीवन का मंत्र है। यह जड़-चेतन में व्याप्त ईश्वर की उपासना का माध्यम है। यह किसी के उपकार के लिए नहीं होती। सेवा त्याग की अभिव्यक्ति होती है। सेवा स्वयं और दूसरों को नर से नारायण बनाने का उपाय है।

सेवा कार्य में किसी भी प्रकार के छुआ-छुत एवं मनभेद का कोई विचार अपने मन में नहीं रखना चाहिए। समाज के सभी लोगों की दुर्बलता दूर किये बिना समर्थ भारत का निर्माण नहीं किया जा सकता। केवल आनंद की अनुभूति पाने के लिए निःस्वार्थ भावना के साथ सेवा कार्य करना चाहिए।

विवेकानंद ने कहा था कि जो दूसरों के लिये जी रहे हैं, वही वास्तव में जी रहे हैं। जो सिर्फ अपने लिये जी रहे हैं, वे मृतप्राय: हैं। इसलिए जन-जन में सेवा का भाव होना चाहिए।

जनकल्याण और सामाजिक कार्यों में जुटे संगठनों तथा समाजसेवियों को जनमानस की सेवा के साथ-साथ समर्थवान लोगों को समाजसेवा के लिए प्रेरित करना चाहिए।

इस क्रम में सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं से सेवानिवृत्त विशिष्ट व्यक्तियों को निःस्वार्थ सेवा के क्षेत्र से जोड़ना चाहिए। मैं भारत विकास परिषद से कहना चाहूंगा कि वे ऐसे लोगों को समाजसेवा के माध्यम से देश की उन्नति में योगदान देने के लिए प्रेरित करें। मैं समझता हूं कि उनके सहयोग, अनुभव एवं मार्गदर्शन से हमारी युवा पीढ़ी को उनके जीवन को आकार देने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

देश के चहुमुखी विकास के लिए हर समाज, हर वर्ग के पिछड़े लोगों की आर्थिक दुर्बलता और कमियों को दूर करना होगा। इसके लिए हम सभी को मिलकर सकारात्मक सोच के साथ कार्य करना होगा। हम सभी को “सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयः” के सिद्धांत का पालन करना होगा।

देश एवं समाज में सुधार एवं विकास का दायित्व केवल सरकार एवं प्रशासन की नहीं होती, इसमें पेशेवर लोगों, व्यवसायिक एवं सामाजिक संगठनों की भी बड़ी भूमिका रहती है। व्यक्तिगत रूप से भी लोग भी अपने ईमानदार कर्मों से देश के विकास में अपना योगदान देते हैं।

स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है कि- **"जिस प्रकार केवल एक ही बीज पूरे जंगल को पुनर्जीवित करने के लिए पर्याप्त है। उसी प्रकार एक ही मनुष्य विश्व में बदलाव लाने के लिए पर्याप्त है। ये मनुष्य आप हो सकते हैं।"**

मैं समझता हूं कि देश के हर एक नागरिक में यह क्षमता है कि वे समाज और राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि उसकी प्रतिभा और दक्षता को देश एवं समाज के विकास में योगदान के लिए उसे प्रोत्साहित किया जाए। इस संदर्भ में भारत विकास परिषद को उत्कृष्ट स्तर पर कार्य करना होगा, जिससे यह सेवा के क्षेत्र में मानक बन सके। सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए परिषद को सुनिश्चित योजना तैयार करनी चाहिए और दक्षता विकास के लिए निरंतर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए।

इससे कार्य क्षेत्र में आवश्यक विशिष्ट ज्ञान के साथ ही सामूहिकता, परिश्रम, लगन, निरंतरता, समन्वय और आदर्श नेतृत्वकारी गुणों का विकास होगा।

मुझे खुशी है कि देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र में भी भारत विकास परिषद सक्रियता से काम कर रहा है। मुझे बताया गया है कि परिषद की उत्तर पूर्व इकाई समय-समय पर देशभक्ति और राष्ट्रहित से संबंधित सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है। निश्चय ही ऐसे कार्यक्रमों से राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बढ़ावा मिलेगा।

इसके अलावा परिषद यहां के विद्यार्थियों एवं युवाओं को भारतीय मूल्यों, संस्कारों, आस्थाओं तथा भारत की गौरव गाथा से परिचित कराकर उनमें देश के प्रति गौरवपूर्ण भावना जागृत करने का सराहनीय प्रयास कर रहा है।

मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि हाल के वर्षों में पूर्वोत्तर क्षेत्र में विकास की लहर तेज हुई है। यहां विकास की दृष्टि से अनेक परियोजनाओं की शुरुआत हुई हैं, जो निश्चित रूप से पूर्वोत्तर क्षेत्र और देश के समावेशी और समग्र विकास की प्रक्रिया में सहायता करेगी।

इस क्षेत्र की अपार संभावनाओं को देखते हुए हमारे प्रधानमंत्री जी ने इसे **“अष्टलक्ष्मी”** की संज्ञा दी है। सरकार की एक्ट ईस्ट पॉलिसी ने इस क्षेत्र के लिए आशा की किरण जगाई है।

भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र अपनी अनूठी सांस्कृतिक और समृद्ध विरासत के साथ हमारे देश के दिल में एक विशेष स्थान रखता है। क्षेत्रीय चुनौतियों का समाधान करने और समग्र विकास के रास्ते तलाशने के उद्देश्य से इस अधिवेशन में मन और विचारों का संगम देखना खुशी की बात है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस द्विवार्षिक अधिवेशन में सार्थक चर्चा से क्षेत्र के लोगों के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक सशक्तिकरण और राष्ट्र निर्माण में क्षेत्र की भूमिका के लिए नए विचार और सुझाव सामने आएंगे। इस सामूहिक कार्रवाई और सहयोग के माध्यम से हम स्वस्थ, समर्थ और संस्कारित भारत के दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए यहां के प्राकृतिक और मानव संशाधनों का उपयोग कर सकेंगे।

मैं भारत विकास परिषद, उत्तर पूर्व क्षेत्र के पदाधिकारियों की सराहना करता हूं, जिन्होंने इस आयोजन को संभव बनाने के लिए अथक प्रयास किया है।

मेरी कामना है कि भारत विकास परिषद अपने क्रियाकलापों से भारत को वैचारिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में नवीनतम ऊँचाईयों का कीर्तिमान स्थापित करे तथा 'स्वस्थ, समर्थ, समृद्ध एवं संस्कारित भारत' की परिकल्पना को पूर्ण करने में मील का पत्थर साबित हो।

अंत में एक सार्थक और सफल अधिवेशन और परिषद के भावी कार्यक्रमों एवं परियोजनाएं के लिए मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

जय हिन्द।